ईमानदारी की पेटी

शुचि शर्मा (स.अ.)
कम्पोजिट विद्यालय, मो. देवमल,
बिजनौर

नवाचार का उद्देश्य– भारतीय परम्परा यही सिखाती है कि चोरी न करना, अधिक संचय न करने की आदत मानव को सभ्य एवं श्रेष्ठ नागरिक सिद्ध करती है। प्रस्तुत नवाचार के माध्यम से शिक्षिका द्वारा विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास करने का प्रयास किया गया। इसका उद्देश्य यह था कि बच्चों का प्रारम्भ से ही ऐसे नैतिक, चारित्रिक मूल्यों से परिचय हो जाये जो उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक हो और उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाने में योगदान दें। इस प्रकार की गतिविधि न केवल उनके व्यक्तित्व को सही दिशा प्रदान करेगा,

अपितु वे स्वयं भविष्य में निश्चित रूप से विद्यालय, परिवार, गाँव, समाज और पूरे देश को सही दिशा दिखाने में सक्षम बनेंगे। विद्यालय में बच्चों के आये दिन छोटे–छोटे सामान जैसे पेन्सिल, रबड़ शॉर्पनर खो जाते है, कुछ बच्चे अनजाने में दूसरे बच्चों के सामान रख लेते हैं। अतः 'ईमानदारी की पेटी' की गतिविधि में बच्चे दूसरे बच्चों के प्राप्त समान को स्वयं न रखकर उस पेटी में डालकर ईमानदारी का गुण अपनाते है और दूसरे बच्चों के लिए एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इसी के अन्तर्गत बच्चों को यह भी सुविधा है कि वे अपने मन की अनकही बाते कागज पर लिख कर निःसंकोच उसी पेटी में डालकर उनका समाधान प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रकार वह नैतिकता व ईमानदारी का पाठ तो सीखते ही है, साथ ही उनकी व्यक्तिगत तथा अनकही समस्याओं के समाधान भी शिक्षिका द्वारा करने का प्रयास किया जाता है।

क्रियान्वयन– बच्चों में मानवीय मूल्यों के विकास, आत्मविश्वास में वृद्धि और उनमें भावनाओं की अभिव्यक्त को बढ़ाने के लिए यह नवाचार अत्यंत सरल, रोचक एव सुगम रूप से क्रियान्वित किया जाता है। बच्चों के मानस पटल पर नैतिक मूल्यों की स्थाई समझ बनाने के लिए कक्षा में ईमानदारी और मन की बात सम्बन्धी पेटी को रखा गया। शिक्षिका द्वारा बच्चों को समझाया गया कि कक्षा में यदि उन्हें किसी अन्य बच्चों के छूटे हुए सामान जैसे– रबर, कटर, पेन, पेन्सिल, पैसे इत्यादि मिले तो वह ईमानदारी से उस सामान को पेटी में सुरक्षित रख दें। इसके साथ ही मन की बात पेटी में बच्चे अपनी ऐसी पारिवारिक समस्या, व्यक्तिगत समस्या, अविश्वास जैसी भावनाओं को भी पेपर पर लिख कर शिक्षिका से साझा करते हैं, जिसे सबके सामने वह बताने में झिझकते अथवा डरते हैं। इस प्रकार सभी बच्चे इस पेटी के माध्यम से अपनी बात शिक्षकों तक पहुँचाते हैं तथा यथोचित समाधान पाकर उत्साहित हो जीवन के प्रति आशान्वित होकर सत्कर्म करने की प्रेरणा पाते हैं।

जब किसी बच्चे का समान विद्यालय में छूट जाता है तो वह दूसरे बच्चों द्वारा पेटी में डाले गये समान को देखकर अध्यापिका की अनुमति लेकर अपना समान वापस प्राप्त कर लेता है। जिस बच्चे को यह समान मिलता है वह ना

केवल प्रसन्न होता है वरन् धन्यवाद जैसे शब्दों से दूसरे बच्चों को उदगार व्यक्त करता है। इस प्रकार बच्चों में ईमानदारी व सहयोग के गुणों का विकास होता है और वे दूसरे बच्चों को भी प्रेरित करते हैं।

प्रभाव– इस छोटे से प्रयास के पश्चात् बच्चों में बेहद आश्चर्यजनक एवं सकारात्मक परिणाम देखे गए। बच्चे अपने समान, विद्यालय, परिवार एवं देश की सम्प्रति के प्रति वफादार एवं जागरूक बनते है। अपने से छोटे तथा साथ के बच्चों के लिए प्रेरणा प्रदान करते हैं। वे कई अन्य नकारात्मक विचार एवं व्यवहार से दूर हो जाते हैं। जो बच्चे मुखरित नहीं है, अर्न्तमुखी हैं उनको भी मुखरित, जागरुक ईमानदार बनाने में यह पेटी अत्यंत कारगर सहायक हुई हैं।